THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.06

# वेदों में वन संरक्षण एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता

**श्रीमती सन्ध्या गिरि**
हंडिया पी0जी0 कॉलेज, हांडिया प्रयागराज

**सारांश**

*हिन्दू समाज में जो यह मान्यता प्रचलित है कि यह शरीर पंचतत्त्वात्मक है तो यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि केवल मानव शरीर ही नहीं वरन् सम्पूर्ण पर्यावरण पंचमहाभूतों अग्नि, जल, आकाश, वायु और तेजस् से ही विनिर्मित हैं इसीलिए वैदिक मानव और उनके अग्रचेता ऋषियों ने सृष्टि के कारण भूत तत्त्वों को दैव श्रेणी में रखकर उनका स्तवन और आराधन किया था। उसका निहितार्थ यही था कि जब पर्यावरण का निर्माण करने वाले घटक भूमि, जल, अग्नि, वायु आदि प्रसन्न और स्वच्छ रहेंगे तो मानव के परितः स्थित पर्यावरण भी स्वस्थ एवं जीवनानुकूल रहेगा। रोग, दोष, संताप मानव शरीर और समाज से दूर रहेंगे।*

वेद भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। ये मानव मात्र के प्रकाश स्तम्भ में हैं। वेदप्राणी मात्र के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हुए सुख व शान्ति की स्थापना करते हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में 1–3 करोड़ हेक्टेयर वन प्रतिवर्ष काटे जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप भयंकर रूप में जलवायु असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है तथा सूखा, बाढ़, अकाल, पृथिवी के जल स्तर में भारी गिरावट, सूनामी जैसी लहरों का आना आदि आपदायें चारों ओर दृष्टिगोचर हो रही हैं। वृक्षों के अन्धाधुन्ध कटान के कारण हमारा पर्यावरण भी पूर्णतः प्रदूषित हो चुका है। इन सब समस्याओं का एक ही मुख्य समाधान है वह है अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने निश्चित रूप से वनों के महत्त्व को करोड़ों वर्ष पूर्व ही समझ लिया था। यही कारण है कि चारों वेदों में वृक्ष–संरक्षण सम्बन्धित सामग्री प्रचुर मात्रा में मिलती है। वेदों में न केवल वृक्षारोपण के महत्त्व को बताया गया है अपितु हमें कौन–कौन से वृक्ष लगाने चाहिए इस तथ्य को भली–भाँति समझाया गया है। ताकि हम केवल वृक्षारोपण के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए खतरनाक विदेशी पौधे तथा यूकेलिप्टस, कीकर आदि वृक्ष न लगाकर अपने देशी वृक्ष यथा अश्वत्थ अपामार्ग, कुष्ठ, न्यगोध्र, खदिर आदि वृक्ष लगायें जिससे हमारा जीवन स्वस्थ व सुरक्षित रहे।

सम्पूर्ण वैदिक साहित्य जीव एवं प्रकृति के सह–अस्तित्व एवं अन्योन्याक्षित सम्बन्ध पर जोर देता है। वैदिक ऋषि अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृतज्ञ भाव से प्रकृति की शरण में जाता है और इसलिए वैदिक संहिताओं में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, अन्तरिक्ष जैसे तत्त्व देवत्वभाव को प्राप्त होते दीखते हैं। पृथ्वी उसके लिए साक्षात् मातृ स्वरूपा है– माता भूमिः पुत्रो हं पृथिव्याः।[1] वेद जड़–चेतन पदार्थों में ईश्वर को व्याप्त मानकर शोषण–प्रवृत्ति का निषेध करते है।

त्यागपूर्वक भोग का निर्देश देते हैं– तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः[2] शुक्ल यजुर्वेद के 36वें अध्याय का 17वाँ मन्त्र प्रकृति के प्रति मनुष्य के सार्वकालिक आदर्श दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है जिसमें, पृथिवी, अन्तरिक्ष, जल, औषधियों, वनस्पतियों को संतुलित, संतृप्त एवं शान्त करने की प्रार्थना है।

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 146वें अध्याय में वर्णित अरण्यानी सूक्त वर्तमान में संचालित हरितक्रांति, वृक्षारोपण कार्यक्रमों का पुरोधा कहा जा सकता है। दीर्घ अन्तराल के उपरान्त अपने आश्रम को लौटे ऋषि एरम्मद आश्रम की वनस्पतियों औषधियों, जड़ीबूटियों, लताओं, वृक्षों को नष्टप्राय देखकर आत्मग्लानि से परिपूर्ण हो वनदेवी से क्षमा मांगते हैं साथ ही यह संकल्प भी लेते हैं कि वे पुनः औषधियों, वनस्पतियों को प्रयत्नपूर्वक उगाएगें पुनः, उस क्षेत्र को हरा–भरा करेंगे एवं वनदेवी से भी प्रार्थना करते हैं कि वे भी ऐसा उपाय करें जिससे कोई इन अरण्यानियों को नष्ट न कर सके।

**न वा अरण्यानिः हन्त्यन्यक्षेत्राभिगच्छति ।**
**त्वादौः कलयः जगध्वाय यथाकामं निपद्यते।।**[3]

वस्तुतः अरण्यानि सूक्त हमारे पर्यावरण रक्षा एवं वानस्पतिक चेतना का दिग्दर्शक है आज पर्यावरण रक्षा के लिए राज्य सरकार एवं स्थानीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। वृक्षमित्र पुरस्कार, वृक्षों को राखी बांधना, वृक्षों की रक्षा हेतु उनसे चिपक कर प्राण त्यागना (चिपको आन्दोलन) इत्यादि समाचार हमारे पर्यावरण प्रेम को दर्शाते हैं। अतः उन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण की रक्षा की और समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। वे भूमि को ईश्वर का रूप ही मानते थे। पर्यावरण की रक्षा पूजा का एक अविभाज्य अंग था।

**यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्।**
**दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।**[4]

अर्थात् भूमि जिसकी पाद स्थानीय है और अन्तरिक्ष उदर के समान है तथा द्युलोक जिसका मस्तक है। उन सबसे बड़े ब्रह्म को नमस्कार है। श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता के सातवें अध्याय ज्ञानविज्ञानयोग में अर्जुन को स्पष्ट किया है–

**भूमिरापो यो वायुः खं मनोबुद्धिरेव च।**
**अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।**[5]
**अपरेथमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।**

**जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।।**[6]

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वृक्षारोपण को वैदिक काल से विशेष प्राप्त रही है। पराशर ऋषि के अनुसार–

**दश कूप समोवापी दशव्यापी समोह्रदः ।**

**दशह्रद समः पुत्रः दशपुत्र समोद्रुमः।।**

अर्थात् दस कुओं के बनाने के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ी खुदाने के बराबर एक तालाब, दस तालाब खुदाने के बरावर एक पुत्र या शिष्य को धर्म परायण बनाना व दस समाज सेवी पुत्रों के बराबर एक वृक्ष लगाने का पुण्य होता है।

वनों के कटाव से अनेक प्राकृतिक आपदाएँ जैसे सूनामी सदृश प्रलयकारी बाढ़, सूखा, भूमिकटाव, भूस्खलन, ग्लोवलवार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना, पेयजल एवं धरती के नीचे के जलस्तर का निरन्तर कम होना, जलवायु परिवर्तन जैसी अनेकानेक भीषण समस्यायें विकराल रूप धारण करके पृथ्वी पर जीवन के समक्ष एक भीषण चुनौती के रूप में उपस्थित है।

अथर्ववेद में इसके समाधान हेतु इन तत्त्वों की शुद्धि की बात की है–

**द्रुपदादिवमुमुक्तानः स्विन्तः स्नातवा मलादिव।**

**पूतं पवित्रेणेवाज्यं विश्वे शुम्भुन्तु मैनसः।।**[7]

केवल मानव ही नहीं, वन्य प्राणी एवं पशु–पक्षी भी वृक्षों एवं वनों के अभाव में त्रस्त हो रहे हैं। वस्तुतः प्रकृति के प्रति सघन आत्मीयता एवं अगाध श्रद्धा अनादि काल से मानव मन में अनुभव किया है। सहस्रों वर्ष पूर्व वैदिक मनीषियों की दृष्टि पर्यावरण के महत्त्व की ओर थी। उस युग में शिक्षा, शोध, तपस्या एवं चिन्तन के केन्द्र बनों के सुरम्य वातावरण होते थे। मनुष्य एवं प्रकृति के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को गहराई से समझने वाले ऋषियों के विचार, उनका दृष्टिकोण निःसन्देह ज्ञातव्य एवं अनुकरणीय हैं। प्रकृतिपूजक वैदिक ऋषियों ने मानव जीवन के आधार एवं प्रतिपालक होने के कारण प्रकृति के समस्त अवयवों में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया तथा वृक्षों को देवत्त्व से विभूषित करते हुए नमो वृक्षेभ्यः[8], वृक्षाणां पतयेनमः[9], ओषधीनां पतये नमः[10], वनानां पतये नमः[11] कहकर उनकी स्तुति की।

वैज्ञानिकों के अनुसार एक औसत आकार का वृक्ष एक वर्ष में हमें एक टन ऑक्सीजन प्रदान करता है, सघन वृक्षों के झुण्ड (500 वर्गमीटर वन क्षेत्र) तापक्रम को 5 सेण्टीग्रेड तक कम कर सकते हैं तथा विकिरण एवं ध्वनि–प्रदूषण को 10 से 14 प्रतिशत तक रोकने में समर्थ है। अनुसन्धानों के आधार पर आज हमारे वैज्ञानिक जिस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, वनों एवं वृक्षों की महत्ता को समझने वाले वैदिक मनीषी स्वधिते न हिंसीत[12] कहकर वृक्ष को न काटने तथा उनकी सतत् रक्षा के लिए अनेक स्थलों पर निर्देश देते हैं–

**पृथिवी देव यजन्योषध्यास्ते मूलं माहिंसिषम्।**[13]

ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम मण्डल अर्थात् सोम–सूक्त, अरण्यानी सूक्त एवं अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त इत्यादि के बारम्बार एक ही उद्घोष सुनाई देता है कि हमारी भूमि हरी–भरी रहे तथा स्वास्थ्यवर्धक औषधियों, वनस्पतियों से सदा परिपूर्ण रहे एवं हमारे लिए सुखदायिनी हो– प्रजापतिः पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशांरण्यां न कृणोतु, गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तो रण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु, यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवस्तिष्ठन्ति विश्वहाः।

पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि।।

वन एवं वृक्षों के विशाल संसार प्रकृति के विराट स्वरूप एवं रहस्यमयता का अनुभव कराते हैं। ऋग्वेद में उल्लेख है कि पृथ्वी वृक्ष से उत्पन्न हुई है– भू अज्ञे उत्तानपदः । वृहदारण्यक उपनिषद् में वृक्ष का दृष्टान्त देकर पुरुष (परब्रह्म) की व्याख्या की गयी है। पुरुष का स्वरूप वृक्ष जैसा है।

वेद एवं उपनिषद् साहित्य में अनेक पुष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं, जिनसे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सजग वैदिक ऋषि वन, वृक्ष एवं वनस्पतियों के संरक्षण हेतु प्रयत्नशील दिखलाई देते हैं। पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा हेतु वन संरक्षण, संवर्धन एवं वनीकरण की नितान्त आवश्यकता है और इस वैदिक ऋषियों के उपदेशों की प्रासंगिकता सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है।

**संदर्भ**


1. अथर्ववेद 12/1/12
2. यजु0 40/1
3. ऋ0 अरण्यानी सू0 10/146/25
4. अथर्ववेद 10/17/32
5. गीता 7/4
6. वही, 7/5
7. अथर्ववेद 6/115/3
8. यजु0 16/17
9. वही 16/18
10. वही, 16/19
11. वही 16/18
12. वही 4/1
13. वही 1/25
14. अथर्व0 12/43
15. वही 12/11

**Cite this Article:**

**श्रीमती सन्ध्या गिरि,“ वेदों में वन संरक्षण एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता”** The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.53–57, Volume-05, Issue-02, July-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

श्रीमती सन्ध्या गिरि

**For publication of Research Paper title**

वेदों में वन संरक्षण एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Editor- In-chief**

**Dr. Neeraj Yadav**
**Executive-In-Chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

**DOI :** https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.06